पहले पेज से आगे

सर्जिकल स्ट्राइक पर दुनिया में किसी ने सवाल नहीं उठाया

और तब वे इसे समझते नहीं थे। अब आतंकियों ने उन्हें आतंकवाद का अर्थ समझा दिया है, इसलिए हमें अब उन्हें समझाने की जरूरत ही नहीं है।

मोदी ने कहा कि सजर्किल स्ट्राइक ने दिखा दिया कि आम तौर पर संयम के सिद्धांत का पालन करने वाला भारत जरूरत पड़ने पर अपनी संप्रभुता की रक्षा भी कर सकता है और अपनी सुरक्षा सुनिश्चित भी कर सकता है। उन्होंने प्रवासी भारतीयों से कहा, भारत ने जब सजर्किल हमले किए तो विश्व को हमारी ताकत का अहसास हो गया। दुनिया ने देखा कि वैसे तो हम संयम बरतते हैं, लेकिन आतंकवाद से निपटने और खुद की सुरक्षा करने के दौरान जरूरत पड़ने पर भारत अपनी शक्ति और पराक्रम भी दिखा सकता है।

पीएम मोदी ने कहा, सर्जिकल स्ट्राइक एक ऐसी घटना थी, यदि दुनिया चाहती, तो भारत के बाल नोंच लेती। हमें कटघरे में खड़ी करती, हमसे जवाब मांगा जाता, लेकिन भारत के इतने बड़े कदम पर दुनिया में कहीं भी एक सवाल तक नहीं उठा। मोदी ने पाकिस्तान पर एक और तंज कसते हुए कहा, हां, उन लोगों की बात और है, जो सजर्किल हमलों का शिकार बने। उनकी यह बात सुनकर वहां बैठे श्रोता ठहाके लगाने लगे।

इसके अलावा दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामकता पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए वैश्विक व्यवस्था को भंग करने में यकीन नहीं रखता। उन्होंने कहा, यह भारत की परंपरा और संस्कृति है। हम अंतरराष्ट्रीय नियमों से बंधे हैं क्योंकि यह हमारा चरित्र और प्रकृति है। हमारे लिए वसुधैव कुटुंबकम महज शब्द नहीं हैं, यह हमारा चरित्र एवं प्रकृति है।

प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार के कामकाज का जिक्र करते हुए कहा कि 3 साल के कार्यकाल में सरकार पर भ्रष्टाचार का एक भी दाग नहीं लगा है। उन्होंने कहा कि पहले के मुकाबले भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, एक बार कहने पर सवा करोड़ सक्षम लोगों ने सब्सिडी छोड़ दी। इसके बाद सब्सिडी के पैसों से गरीबों को रसोई गैस उपलब्ध कराई गई। भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, च्हमने बीड़ा उठाया है कि पांच करोड़ गरीब परिवारों में गैस चूल्हा उपलब्ध कराया जाए। मुझे गर्व है कि अभी तक एक करोड़ परिवारों को गैस सिलिंडर उपलब्ध करवा दिए गए हैं।

इससे पहले अमेरिका के दो दिवसीय दौरे के पहले दिन रविवार को पीएम मोदी ने वॉशिंगटन में अमेरिका की 20 दिग्गज कंपनियों के साथ बैठक की। उन्होंने जीएसटी को गेमचेंजर बताते हुए निवेशकों को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित भी किया। सोमवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के साथ पीएम मोदी की ऐतिहासिक वार्ता होगी।

भारत ने वेस्ट इंडीज को 105 रनों से हराया

हालांकि शतक के बाद रहाणे मिगुल कमिंस की बॉल पर बोल्ड हो गए लेकिन आउट होने से पहले वह अपना काम कर चुके थे।

रहाणे के आउट होने के बाद युवा बल्लेबाज हार्दिक पंड्या बैटिंग पर आए, लेकिन पंड्या ज्यादा कुछ कर नहीं पाए। पंड्या 4 रन बनाकर आउट हुए। पंड्या के बाद अनुभवी युवराज सिंह (14) कैप्टन कोहली का साथ निभाने आए। लेकिन वह भी जल्दी ही आउट हो गए। धोनी क्रीज पर आए, तो विराट ने रनगति का चार्ज अपने हाथ में ले लिया। विराट ने 66 बॉल पर 87 रन बनाए। अपने 87 रन की पारी में 4 चौके और 4 छक्के जमाए। अंत में वह जोसफ का दूसरा शिकार बने। विराट के बाद एमएस धोनी और केदार जाधव ने 13-13 रन का योगदान देकर भारत के स्कोर को 300 पार पहुंचा दिया था।

जवाब में वेस्ट इंडीज की शुरुआत बहुत खराब रही। पहले ही ओवर में भुवनेश्वर कुमार ने कायरन पॉवेल को विकेटकीपर धोनी के हाथों कैच आउट कराकर अपनी टीम कामयाबी दिलाई। वेस्ट इंडीज इस झटके से उबरा भी नहीं था कि अपने अगले ही ओवर में भुवनेश्वर ने जेसन मोहम्मद को भी खाता खोले बिना पविलियन को चलता किया। बाहर जाती इस गेंद पर मोहम्मद ने ड्राइव करने का प्रयास किया लेकिन बैकवर्ड पॉइंट पर खड़े हार्दिक पंड्या ने एक आसान सा कैच पकड़कर कैरेबियाई टीम का स्कोर 4/2 कर दिया।

इसके बाद सलामी बल्लेबाज शाई होप्स ने इविन लुइस के साथ मिलकर अपनी टीम की पारी को संभालने का काम शुरू किया दोनों ने मिलकर तीसरे विकेट के लिए 89 रन जोड़े। इसमें होप्स अधिक आक्रामक नजर आए। वेस्ट इंडीज का स्कोर जब तीन विकेट पर 93 रन था तब लुइस को कुलदीप यादव ने अपना पहला शिकार बनाया। लुइस ने क्रीज से निकलकर एक बड़ा शॉट खेलने का प्रयास किया लेकिन वह पूरी तरह चूक गए और धोनी ने उन्हें स्टंप कर इस साझेदारी का अंत किया।

होप्स भी इसके बाद ज्यादा देर तक नहीं टिक पाए और 81 रन बनाकर यादव का दूसरा शिकार बने। उन्होंने 88 गेंदों पर पांच चौकों और तीन छक्कों की मदद से 81 रनों की पारी खेली। यादव की एक डिप होती गेंद उनके पैड से टकराई। भारतीय टीम ने एलबीडब्ल्यू की अपील की जिसे अंपायर ने ठुकरा दिया। टीम ने इस पर रिव्यू लेने का फैसला किया। इससे साफ हो गया कि अब होप्स की उम्मीदें खत्म हो गई हैं।

इसके बाद कैरेबियाई पारी लड़खड़ानी शुरू हो गई। कार्टर को पगबाधा कर अश्विन ने अपनी पहली कामयाबी हासिल की। कप्तान जेसन होल्डर आउट होने वाले आखिरी बल्लेबाज रहे। एक बार फिर चाइनामैन यादव ने अपनी फिरकी में बल्लेबाज को फंसाकर क्रीज से बाहर निकाला। होल्डर गेंद की लंबाई और लाइन पढ़ने में नाकाम रहे और क्रीज से बाहर निकल आए बाकी का काम धोनी ने कर दिया।

भारत ने अब पांच वनडे मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। 23 जून को खेला गया मैच बारिश के कारण रद्द हो गया था। वहीं सीरीज का अगला मैच 30 जून को ऐंटिगुआ में खेला जाएगा।

पेज 15 से आगे

ओह, विपक्ष ने कैसे दुत्कारा आम आदमी पार्टी को!

पर दरअसल वो लोगों को अराजनैतिकता की ओर ले जाता है। अराजनीतिक बनाना या अ-राजनीति की ओर ले जाना भी दरअसल एक खास तरह की राजनीति है पर इस समय उस बहस में हम नहीं उलझेंगे।

अरविंद केजरीवाल की राजनीति दरअसल एनजीओ मॉडल की राजनीति है जो मौजूदा राजनीतिक विमर्श और राजनीतिक पार्टियों और विचारधाराओं को घटिया, गैरजरूरी और जड़ साबित करके अपनी अहमियत स्थापित करना चाहती है। ये विचारधारा से परे की राजनीति है और बहुत से लोग मानते हैं कि ये विचार-शून्यता की राजनीति है। इसलिए आप पाएंगे कि आम आदमी पार्टी में जहां एक ओर कुमार विश्वास जैसे हिंदुत्व समर्थक हैं तो वामपंथी विचारों वाली आतिशी मारलीना भी।

आप के नेताओं की बातों से कभी आपको समाजवादी समाज के सपने की झलक मिलेगी तो कभी आशुतोष जैसे आप नेता खुले बाजार की हिमायत करते मिलेंगे।

आम आदमी पार्टी की राजनीति का प्रस्थान बिंदु भ्रष्टाचार रहा। भ्रष्टाचार जीरो-रिस्क मुद्दा है। इससे न किसी की भावनाएँ आहत होती हैं और न किसी को भेदभाव की शिकायत रहती है। इसीलिए जितने जोश खरोश से आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बात करती है उतने जोश ख़रोश से वो भारत जैसे जटिल समाज की दूसरी गंभीर समस्याओं मसलन सरकारी नौकरियों, शिक्षण संस्थानों और तरक्की में आरक्षण के मुद्दे पर खुलकर बात करने से कतराती नजर आती है। हाल के चुनावी नतीजों से सबक सीखकर वो अब देशद्रोह-देशप्रेम और मुसलमानों की लिंचिंग पर भी रणनीतिक चुप्पी साधने लगी है।

राजनीति के एनजीओ-करण के साथ साथ अरविंद केजरीवाल ने घर में घुसकर मारूँगा टाइप की छापामार राजनीति की शुरुआत की और इस प्रक्रिया में कई दुश्मन खड़े कर लिए।

दिल्ली में तीन बार मुख्यमंत्री रहीं शीला दीक्षित को उनके विधानसभा क्षेत्र में जाकर पछाड़ने के बाद उनके और मुकेश अंबानी के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाने का उन्हें शुरुआती फायदा मिला लेकिन उन मामलों में आगे न बढ़ पाने की लाचारी से उनकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो गए।विश्वसनीयता पर सवाल खड़े होने के और कारण भी हैं। जो आदमी खुद को नरेंद्र मोदी की काट साबित करने के लिए बनारस जाकर उनसे भिड़ गया और सर्जिकल स्ट्राइक सहित हर मुद्दे पर प्रधानमंत्री को कठघरे में खड़ा करने का कोई मौका नहीं छोड़ता था, पंजाब विधानसभा और दिल्ली नगर निगम में मिली करारी हार के बाद अब मोदी पर राजनीतिक चुप्पी साधने लगा है।

लोगों को इसके पीछे की राजनीति समझ में आती है। वरना क्या कारण है कि अपने बजट का 41 प्रतिशत हिस्सा शिक्षा और स्वास्थ्य पर (24 प्रतिशत शिक्षा पर और 17 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवाओं पर) खर्च करने वाली जो सरकार गवर्नेंस का मॉडल खड़ा कर सकती थी, उसके हाथों से जन समर्थन फिलहाल मुट्ठी की रेत की तरह छीजता नजर आ रहा है?

पेज 9 से आगे

शिवसेना ने की बीजेपी की तारीफ

संपादकीय में उद्धव ने किसानों की कर्ज माफी पर सवाल उठाने और इसे फैशन का नाम देने वालों को जवाब देते हुए कहा कि शिवसेना के लिए यह लड़ाई किसानों और उनके बच्चों के भविष्य और उनकी जिंदगी-मौत की थी।

तेजस्वी के बयान पर जदयू का सख्त रुख

बयानबाजी की जा रही है, वह बरदाश्त नहीं की जायेगी। पानी सिर के ऊपर से गुजर रहा है और निर्णय लेने का समय जल्द आयेगा। उन्होंने कहा कि राजद के नेता सीमा को पार कर रहे हैं। जिस भाषा का वे प्रयोग कर रहे हैं, वह भाषा जदयू को भी आती है। उन्हें उसी भाषा में जवाब दे सकते हैं। संजय सिंह ने कहा कि राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद रोज-रोज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ पार्टी नेताओं के बयान दिलवा रहे हैं, जबकि जदयू बार-बार राजद नेता रघुवंश प्रसाद सिंह व विधायक भाई वीरेंद्र पर अंकुश लगाने व पार्टी से निकालने की अपील कर चुका है। अगर राजद सुप्रीमो द्वारा अपने नेताओं की बयानबाजी पर रोक लगायी जाती, तो इस तरह की बात नहीं होती। उन्होंने कहा कि राजद सुप्रीमो को क्या मजबूरी है या फिर रघुवंश प्रसाद सिंह व भाई वीरेंद्र से वे डरते हैं, जो उन पर कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। जदयू का एक पंचायत स्तर के नेता ने भी आज तक लालू प्रसाद के खिलाफ कुछ नहीं कहा है, जबकि राजद के नेता लगातार जदयू के नेता पर हमला करते रहते हैं और यह सब लालू प्रसाद चुपचाप देखते व सुनते हैं। अब यह बरदाश्त नहीं किया जायेगा।

बयान देने में संयम बरतें पार्टी नेता-तेजस्वी

हमारी लड़ाई विचारधारा को लेकर है। इसी बयान को लेकर जदयू ने नाराजगी जतायी है।

महागठबंधन कायम रहेगा -डॉ रघुवंश

वहीं, राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ रघुवंश प्रसाद सिंह ने कहा कि राष्टपति चुनाव को लेकर उपजे मतभेद के बावजूद महागंठबंधन कायम रहेगा। मुजफ्फरपुर जिले के बरूराज हाइस्कूल में रविवार को स्थानीय विधायक की ओर से आयोजित इफ्तार पार्टी में उन्होंने कहा कि राजद हमेशा से सांप्रदायिक शक्तियों के खिलाफ आवाज बुलंद करता रहा है। उन्होंने कहा कि सेक्युलर दल मीरा कुमार के पक्ष में एकजुट हैं। अगर हार भी होती है, तो भविष्य में यह जीत का रास्ता तय करेगा। एनडीए प्रत्याशी रामनाथ कोविंद को जदयू के वोट देने का निर्णय उनका अपना निर्णय है। इससे महागठबंधन पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

24 जून को डिप्टी सीएम ने क्या बोला था

मैदान में उतरने से पहले कोई कैसे कह सकता है कि कौन जीतेगा और कौन हारेगा। हमारी लड़ाई विचारधारा से है।

तेजस्वी प्रसाद यादव
(सीएम के बयान पर)

ट्रेन में मारे गए जुनैद के गांव में काली पट्टी बांधकर नमाज

पूरे डिब्बे के लोग एक हो गए थे। सब लोगों ने कहा ये मुसलमान हैं, देश द्रोही हैं इनको मारो।

एक आरोपी हुआ गिरफ्तार

वहीं हरियाणा के डीसीपी विष्णु दयाल ने कहा कि वारदात रात में हुई और दूसरा ट्रेन में मौजूद लोगों को भी मदद करनी चाहिए थी। साथ ही कहा कि खांडावली गांव के लोगों ने काली पट्टी नहीं बांधी , बल्कि बाहर से लोग इस गांव में काली पट्टी बांधकर आए हैं। उनका कहना था वो इसी गांव से ताल्लुक रखते हैं ना कि बाहर के , तो हम उनके साथ है। उन्होंने बताया कि, इस मामले में अभी एक आरोपी गिरफ्तार हुआ है बाकी कुछ आरोपी आरोपियों की पहचान हो गई है। उनको जल्द गिरफ्तार किया जाएगा। वही गांव वालों ने काली पट्टी बांधकर अपना विरोध दर्ज किया।

गांव के बुजुर्गों साफ-साफ कहना है कि परिवार को इंसाफ मिलना चाहिए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए उनका यहां तक भी कहना था कि परिवार को सरकार को चाहिए कि वह आर्थिक मदद दे।

जुनैद घर लोगों का लगा आना जाना

बता दें कि जुनैद के परिवार में तमाम लोगों का आना जाना जारी है। कुछ लोग काली पट्टी बांधकर उनके घर पहुंचे हैं, तो कुछ एक दूसरे गांव से यहां पहुंचे हैं। इस मुद्दे पर हमने जुनैद के पिता जलालुद्दीन से बातचीत की उनका साफ-साफ कहना है कि सरकार को इस दिशा में ठोस कदम उठाना चाहिए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। साथ ही उन्होंने बताया कि अब तक सरकार की तरफ से कोई नुमाइंदा यहां नहीं पहुंचा।

पेज 12 से आगे

केजरीवाल ने भ्रष्टाचार के मामले में लालू का भी रिकॉर्ड तोड़ा-कपिल मिश्रा

केजरीवाल अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल को भी बीजेपी का एजेंट न बता दें। कपिल मिश्रा यहीं नही रुके उन्होंने अरविंद केजरीवाल को डाकू खड़क सिंह तक कह डाला। उन्होंने कहा, केजरीवाल की नई दिल्ली सीट पर इंडिया अगेंस्ट करप्शन राइट टू रिकॉल करेगी। राइट टू रिकॉल के लिए जुलाई के पहले हफ्ते में होगा जनमत संघर्ष। आखिर में कपिल मिश्रा ने केजरीवाल सरकार को चुनौती देते हुए कहा कि मेरे खिलाफ भ्रष्टाचार का एक भी मामला दिखाएं।

रविवार शाम हुए कार्यकर्ता सम्मेलन में ये तय हुआ कि देशभर से इंडिया अगेंस्ट करप्शन के बैनर तले 10 दिनों में बड़ा संगठन बनाया जाएगा। इस दौरान यह भी तय हुआ कि कपिल मिश्रा जुलाई के पहले हफ्ते से केजरीवाल सरकार के खिलाफ जन जागरण यात्रा शुरू करेंगे।

ट्विटर पर गुहार करने वाले भारतीयों की रात 2 बजे भी मदद करती हैं सुषमा : मोदी

सुषमा स्वराज की आदत की तारीफ की।

प्रधानमंत्री ने कहा, दुनिया के किसी भी कोने में मुश्किल में फंसा कोई भारतीय अगर विदेश मंत्रालय को ट्वीट करता है, तो सुषमा स्वराज 15 मिनट के भीतर उसे जवाब देती हैं, फिर चाहे रात के 2 ही क्यों न बजे हों... सरकार तुरंत कदम उठाती है और परिणाम सामने आते हैं...यह सुशासन है...।

उन्होंने कहा कि पिछले तीन साल में भारत के विदेश मंत्रालय ने मानवीय कूटनीति में नई ऊंचाइयां हासिल की हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया के अलग-अलग कोनों में 80,000 से ज्यादा भारतीय किसी न किसी मुश्किल का सामना कर रहे थे, लेकिन भारत सरकार उन्हें सुरक्षित भारत लेकर आने में सफल रही।

उन्होंने उस भारतीय युवती उज्मा अहमद के मामले का भी ज़िक्र किया, जिसका दावा था कि उसे बंदूक के डर से एक पाकिस्तानी पुरुष से शादी करनी पड़ी थी। पीएम ने कहा, भारत की एक बेटी, जो पाकिस्तान में मुश्किल में फंस गई थी...वह भारतीय उच्चायोग के प्रयासों से भारत लौटी... इसका श्रेय सुषमाजी को जाता है...।

वेस्टइंडीज़ के खिलाफ चैंपियंस ट्रॉफी की टी-शर्ट पहनकर उतरे युवराज

इससे पहले भी पहले वनडे के दौरान भी युवी मात्र 4 रन ही बना पाए थे चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में पाकिस्तान के खिलाफ जड़े अर्धशतक को छोड़ दें, तो उसके बाद युवी ने कुछ खास कमाल नहीं किया है।

टीम इंडिया ने वेस्टइंडीज को क्वींस पार्क ओवल, पोर्ट ऑफ स्पेन में खेले गए दूसरे वनडे मैच में 105 रनों से मात देकर पांच मैचों की वनडे सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है. बारिश से बाधित यह मैच 43-43 ओवर का कर दिया गया था। जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने 43 ओवर में 5 विकेट गंवा कर 310 रन बनाए और वेस्टइंडीज को 311 रनों का लक्ष्य दिया था।

जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज की टीम 43 ओवर में 6 विकेट गंवा कर 205 रन ही बना पाई और भारत ये मैच 105 रनों से जीत गया। वेस्टइंडीज की ओर से शाई होप ने सबसे ज्यादा 81 रन बनाए वहीं रोस्टन चेस ने 33 रनों की पारी खेली. भारत की ओर से कुलदीप यादव ने सबसे ज्यादा 3 विकेट झटके। अजिंक्य रहाणे को उनकी बेहतरीन 103 रनों पारी के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया।

विनोबा का **आपातकाल** को **अनुशासन पर्व** कहना सबसे गलत समझी-समझाई कहानी है

पेज 15 से आगे

वहीं दूसरी ओर भी इंदिरा गांधी को जिस चांडाल चौकड़ी ने अपने मोहजाल में कैद कर रखा था, उसे भी विनोबा और इंदिरा के बीच के शर्तरहित स्नेह के आध्यात्मिक धरातल का ज्ञान दूर-दूर तक नहीं था।

लेकिन दोनों ही पक्षों के सिपहसालारों को विनोबा की निर्भीक तटस्थता और निष्पक्षता के प्रति पूरा भरोसा था। इसलिए जहां जयप्रकाश जी के खेमे ने उन्हें खुद से ही 'अपना' खैरख्वाह मान लिया था। वहीं दूसरी तरफ विनोबा का व्यक्तित्व इतना विराट और सामाजिक रूप से इतना सर्वमान्य था कि राजसत्ता ने सोचा होगा कि यदि विनोबा जैसे ऋषि कुछ सरल, सहज और अहिंसापूर्ण संदेश भी दे देते हैं तो वह उसे अपने पक्ष में प्रचारकर अपने लिए नैतिक समर्थन हासिल कर लेगी।

तत्कालीन केंद्र सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री वसंत साठे जब विनोबा से मिलने उनके आश्रम पहुंचे थे विनोबा ने उन्हें महाभारत के एक अध्याय - अनुशासन पर्व, का शीर्षक दिखाया था

सो राजसत्ता यानी तत्कालीन केंद्र सरकार ने अपने सूचना और प्रसारण मंत्री वसंत साठे को पवनार स्थित विनोबा के आश्रम ब्रह्म विद्या मंदिर में भेजा। विनोबा मौन में थे, और उन्हें अपना मौन तोड़ने का कोई कारण नहीं जान पड़ा। लेकिन विनोबा ने तभी अपने पास रखे ग्रंथ महाभारत के उस अध्याय का शीर्षक साठे को दिखाया जिसमें लिखा था- 'अनुशासन पर्व'।

उस दौर में ज्यादातर सत्ताधारी और सत्ता के करीबी लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए प्रोपेगेंडा का महत्व बखूबी जानने-समझने लगे थे। संभव है तब साठे ने सोचा हो कि विनोबा तो फिलहाल अपना मौन तोड़ने से रहे तो क्यों न वे उनके इस भाव की अपने पक्ष में व्याख्या करते हुए इसका राजनीतिक फायदा उठाएं। साठे को संदेह का लाभ दें, तो यह भी संभव है कि किसी प्रकार की आध्यात्मिक दृष्टि से हीन राजनेता साठे को विनोबा के इस इशारे का मूल भाव समझ में न आया हो। जो भी हो, साठे ने आकाशवाणी, दूरदर्शन और अखबारों का खूब इस्तेमाल करते हुए इसे बार-बार प्रचारित किया कि विनोबा ने आपातकाल को 'अनुशासन-पर्व' यानि सरकार की दृष्टि में देश को 'अनुशासन सिखाने का समय' करार दिया, और इसलिए राज्य सत्ता को कुछ भी करने का असीमित अधिकार है।

यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने देश में जगह-जगह दीवारों पर विनोबा के नाम से बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया- आपातकाल 'अनुशासन-पर्व' है। भोले पत्रकारों, प्रतिक्रिया की आग में जल रहे आंदोलनकारियों और यहां तक कि ज्यादातर सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने भी साठे के इस मूर्खतापूर्ण बयान को सच मान लिया। इसे बार-बार दुहराया गया और जम कर दुरुपयोग किया गया। आने वाली कई पीढ़ियां आज तक इसे ही सत्य मानती रही हैं।

सारे अपमानों को झेलते हुए और सब कुछ सुनते-जानते भी आचार्यवृत्ति वाले विनोबा ने एक वर्ष पूरा किए बिना अपना मौन-व्रत नहीं तोड़ा। 25 दिसंबर, 1975 को जब विनोबा ने अपना मौन तोड़ा तो किसी के पूछने पर उन्होंने 'अनुशासन-पर्व' की वास्तविक व्याख्या की। लेकिन हमारी राजनीति, राजनेता और कथित बुद्धिजीवी वर्ग में उनकी उस सरल-सहज भावना को सुनने-समझने का धैर्य और गांभीर्य बचा ही नहीं था। इसलिए अनुशासन पर्व की विनोबा की निरपेक्ष व्याख्या को भी मीडिया की प्रचलित भाषा में 'डैमेज कंट्रोल' जैसे प्रयास के रूप में देखा गया। फिर उस समय सरकारी दुष्प्रयासों और अतिचारों का प्रचंड दौर चल रहा था। इसलिए विनोबा ने जब इसका वास्तविक आशय स्पष्ट भी किया तो न ही शासन न ही आंदोलनकारियों और न ही मीडिया ने उसे स्वीकार किया।

आपातकाल के ठीक छह महीने बाद यानि 25 दिसंबर, 1975 को अपना एक-वर्षीय मौन-व्रत तोड़ने के उपरांत विनोबा ने जो कहा वह अक्षरशः इस प्रकार है -

'अनुशासन-पर्व' शब्द महाभारत का है। परंतु उसके पहले वह उपनिषद् में आया है। प्राचीन काल का रिवाज था। विद्यार्थी आचार्य के पास रह कर बारह साल विद्याभ्यास करता था। विद्याभ्यास पूरा कर जब वह घर जाने निकलता था तब आचार्य अंतिम उपदेश देते थे। उसका जिक्र उपनिषद् में आया है- एतत् अनुशासन, एवं उपासित्व्यम् यानि इस अनुशासन पर आपको जिंदगीभर चलना है।

आचार्यों का होता है अनुशासन, और सत्तावालों का होता है शासन। अगर शासन के मार्गदर्शन में दुनिया रहेगी तो दुनिया में कभी भी समाधान रहनेवाला नहीं है। शासन के मार्गदर्शन में क्या होगा? समस्या सुलझेगी; लेकिन सुलझी हुई फिर से उलझेगी। यह तमाशा आज दुनियाभर में चल रहा है। 'ए' से 'जेड' तक, अफगानिस्तान से ज़ांबिया तक 300-350 शासन दुनिया में होंगे। फिर उनकी गुटबंदी चलती है। सबदूर असंतोष, मारकाट! शासन के आदेश के अनुसार चलनेवालों की यह स्थिति है। उसके बदले अगर आचार्यों के अनुशासन में दुनिया चलेगी तो दुनिया में शांति रहेगी...

विनोबा का कहना था, अनुशासन का अर्थ है-आचार्यों का अनुशासन! ऐसे निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष आचार्य जो मार्गदर्शन देंगे उसका, उनके अनुशासन का विरोध अगर शासन करेगा तो उसके सामने सत्याग्रह करने का प्रसंग आयेगा।

आचार्य होते हैं, जिनका वर्णन मैंने किया है गुरु नानक की भाषा में -निर्भय, निर्वैर, और उसमें मैंने जोड़ दिया है निष्पक्ष! और जो कभी अशांत होते नहीं, जिनके मन में क्षोभ कभी नहीं होता। हर बात में शांति से सोचते हैं और जितना सर्वसम्मत होता है विचार, उतना लोगों के सामने रखते हैं। उस मार्गदर्शन में लोग अगर चलेंगे, तो लोगों का भला होगा और दुनिया में शांति रहेगी। यह अनुशासन का अर्थ है- आचार्यों का अनुशासन! ऐसे निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष आचार्य जो मार्गदर्शन देंगे उसका, उनके अनुशासन का विरोध अगर शासन करेगा तो उसके सामने सत्याग्रह करने का प्रसंग आयेगा। लेकिन मेरा पूरा विश्वास है भारत का शासन ऐसा कोई काम नहीं करेगा, जो आचार्यों के अनुशासन के खिलाफ होगा।'

वास्तव में, विनोबा 'अनुशासन' को इसके प्रचलित अर्थ में प्रयोग करते ही नहीं थे। इसे उन्होंने और साफ करते हुए एक स्थान पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए इस बारे में जो कहा था उसका जिक्र इसी स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित पिछले आलेख में किया गया है। आचार्य की राजसत्ता से स्वतंत्रता की बात उन्होंने जीवनभर की, और व्यक्तिगत स्तर पर निभाया भी।

आपातकाल से जुड़े इस प्रकरण को पूरी तरह समझने के लिए हमें यह समझना भी जरूरी है कि विनोबा के जयप्रकाश नारायण और इंदिरा गांधी से कैसे संबंध थे।

जयप्रकाश नारायण और विनोबा का एक-दूसरे से अटूट संबंध था। एक-दूसरे के प्रति अनन्य आध्यात्मिक स्नेह था। 1955 में विनोबा के सामने ही जेपी ने सर्वोदय कार्यकर्ता के रूप में 'जीवनदान' की घोषणा की थी। समाजवादी जेपी के जीवन का एक आध्यात्मिक पक्ष भी था जो विनोबा का सान्निध्य पाकर और भी मुखरित होता था। पवनार में विनोबा के ऋषि-खेती के प्रयोग को देखने और कुएं पर रहट चलाते हुए उनकी प्रार्थना में शामिल होने के बाद जेपी ने कहा था- 'आई सी सम लाईट हिअर- मुझे यहां कुछ प्रकाश दीखता है।' भूदान आंदोलन के संदर्भ में एक बार उन्होंने कहा था- 'मैं तो विनोबा जी का भक्त बन गया हूं।'

समाजवादी जेपी के जीवन का एक आध्यात्मिक पक्ष भी था जो विनोबा का सान्निध्य पाकर और भी मुखरित होता था। भूदान आंदोलन के संदर्भ में एक बार उन्होंने कहा था- 'मैं तो विनोबा जी का भक्त बन गया हूं।'

विनोबा की पुस्तक 'गीता-प्रवचन' का अंग्रेजी अनुवाद 'टॉक्स ऑन दी गीता' जब पहली बार 1960 में लंदन में जॉर्ज एलेन एंड अनविन द्वारा प्रकाशित हुआ, तो उस संस्करण में विनोबा का परिचय लिखने के लिए प्रकाशकों ने विशेष रूप से जयप्रकाश नारायण से आग्रह किया। 'लिटिल बिट अबाऊट विनोबा' शीर्षक से जयप्रकाश जी ने लिखा था -

'ईश्वपरायण, गहरी अंतर्दृष्टि संपन्न साधुपुरुष, उद्भट विद्वान तथा विचारक, तीक्ष्ण बुद्धि व असाधारण शक्तिसंपन्न, भाषावेत्ता, उच्चकोटि के लेखक, जन्मजात शिक्षक और मौलिक शिक्षा-विचारक, मनुष्य के नेता और निर्माता, समग्र राष्ट्र-स्तर पर दूसरों को क्रियाशील बनाने वाले, तथा बाल-ब्रह्मचारी विनोबा का व्यक्तित्व सचमुच अनुपम है। अध्यात्म विज्ञान, तत्तवदर्शन, समाज विज्ञान तथा समाज रचना के क्षेत्रों में उनकी देन यथार्थतः मौलिक तथा स्फूर्तिदायक है, जोकि ज्यों-ज्यों वर्तमान दकियानूसी विचारपद्धति के स्थान पर नयी जिज्ञासा और तर्क को स्थान मिलता जायेगा, त्यों-त्यों अधिकाधिक प्रशंसित होगी। परम्परागत भारतीय विचार के अनुसार कहा जा सकता है कि विनोबा में एक साथ ज्ञानयोगी, भक्तियोगी और कर्मयोगी का दुर्लभ समन्वय है।'

जेपी और विनोबा के संबंध ऐसे थे कि उनके बीच स्थाई खटास की कभी कोई गुंजाइश ही नहीं रही। विनोबा भी जयप्रकाश नारायण को अपने काफी निकट मानते थे। 'समाजवाद से सर्वोदय की ओर' पुस्तक की प्रस्तावना में विनोबा ने उनके बारे में जो लिखा था, उसमें उनकी ऋषि दृष्टि और आचार्यत्व की झलक मिलती है- 'जयप्रकाश जी के साथ जब से मेरा परिचय हुआ, उनके अनेक गुणों का मुझ पर असर हुआ है। उन सबमें उनके हृदय की सरलता मुझे अधिक खींचती है। उसी सरलता के कारण वे स्वयं गलतियां भी कर सकते हैं। गांधीजी ने स्वराज्य की एक व्याख्या की थी, 'गलतियां करने का हक़'। जो गलतियां नहीं कर सकता, वह कुछ भी नहीं कर सकता। जयप्रकाश जी के निवेदन में पाठकों को एक सरल हृदय का स्वच्छ चित्र देखने को मिलेगा।'

विनोबा एक स्थान पर लिखते हैं', 'जयप्रकाशजी के साथ जब से मेरा परिचय हुआ, उनके अनेक गुणों का मुझ पर असर हुआ है। उन सबमें उनके हृदय की सरलता मुझे अधिक खींचती है।

इंदिरा गांधी के साथ भी विनोबा का संबंध गुरुवत, भ्रातृवत और पितृवत ही कहा जा सकता है। लेकिन विनोबा जैसे संन्यासी के लिए यह संबंध किसी निजी मोह से नहीं बंधा था। वह तटस्थता की बुनियाद पर ही था। सार्वजनिक रूप से उन्होंने हमेशा उन्हें प्रधानमंत्री इंदिरा जी कहकर ही संबोधित किया। गोहत्या के खिलाफ संसद के घेराव और सत्याग्रह की स्थिति भी इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री रहते ही आई। आपातकाल के दौरान विनोबा के आश्रम से निकलने वाली प्रसिद्ध पत्रिका 'मैत्री' ने गोवध के मुद्दे पर सरकार की तीखी आलोचना की थी। फिर क्या था। पहली बार पुलिस इस आश्रम में घुसी और 'मैत्री' की सारी प्रतियां जब्त कर लीं।

इंदिरा गांधी के जीवन-प्रसंगों ने विनोबा को एक महिला राजनेता की नैतिक, प्रकृतिगत और मातृवत परिस्थितियों को समझने में मदद की थी। और अंततः वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि महिला को राजनीति में उस रूप में नहीं उतरना चाहिए जैसा वह आज उतर रही हैं। अपनी पुस्तक 'स्त्री शक्ति' और 'नारी की महिमा' में उन्होंने स्पष्ट रूप से इसपर अपने विचार रखे।

सत्ता से बाहर रहते हुए इंदिरा गांधी विनोबा का आशीर्वाद लेने पवनार आश्रम पहुंची थीं। तब के अखबारों ने इस घटना को इस तरह प्रचारित किया कि विनोबा खुलकर इंदिरा के पक्ष में आ गए हैं। बाद में विनोबा के निधन पर रूस की अपनी विदेशयात्रा बीच में ही छोड़कर इंदिरा गांधी सीधे पवनार पहुंची तो मीडिया ने अपने पहले वाले कोण को और विस्तार देते हुए इस घटना को कवर किया था।

आपातकाल के दौरान विनोबा के आश्रम से निकलने वाली प्रसिद्ध पत्रिका 'मैत्री' ने गोवध के मुद्दे पर सरकार की तीखी आलोचना की थी। फिर क्या था। पहली बार पुलिस इस आश्रम में घुसी और 'मैत्री' की सारी प्रतियां जब्त कर लीं

इसे सीधे-सीधे उस समय के मीडियाकर्मियों की गलती भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि चाहे वह दौर हो या आज की बात, हम सब स्वयं ही चारों ओर से रणनीतिक, कूटनीतिक और राजनीतिक वातावरण में घिरकर हर व्यक्ति को और हर घटना को एक निश्चित दायरे में समझने और व्याख्यायित करने के अभ्यस्त हो चुके हैं। आपातकाल के समय विनोबा का जीवन भी इन दुर्व्याख्यायों से बच नहीं पाया।

महाभारत के 'अनुशासन पर्व' शब्द और प्रसंग का चलताऊ राजनीतिक अर्थ निकालने वाले बौद्धिक और राजनीतिक समुदाय को आज भी इस पर आत्मचिंतन करने की जरूरत है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य तथा संदर्भों को समझ पाने की अक्षमता का हम किस हद तक शिकार हो चुके हैं। विनोबा का 'अनुशासन पर्व' वास्तव में निर्भयी, निर्वैर और निष्पक्ष आचार्यों के 'अनुशासन' की परंपरा को याद दिलाने वाला इशारा था। वह राजनेताओं के अर्थों वाला दुःशासन पर्व नहीं था। हम उसे समझ नहीं पाए। हम शायद उस दौर में ही यह उम्मीद खो चुके थे कि हमारे बीच ऐसे तटस्थ और स्थितप्रज्ञ ऋषि और संत मौजूद भी हो सकते हैं। (सत्याग्रह)